तृतीय कालांश

५ ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः

उश्च ऊश्च ऊ३श्च वः। वां कालो यस्य सोऽच् क्रमाद् ह्रस्वदीर्घप्लुतसंज्ञः स्यात् । स प्रत्येकमुदात्तादि भेदेन त्रिधा ।

एक मात्रिक, द्वि मात्रिक तथा त्रि मात्रिक उकार के उच्चारण काल के समान जिस अच् का उच्चारण काल हो उसे क्रमशः ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत संज्ञा हो। उन प्रत्येक ह्रस्व आदि अच् का उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित के भेद से तीन- तीन भेद होते हैं।

नीलकण्ठ की ध्वनि एक मात्रा वाली, कौआ की दो मात्रा वाली, मयूर की तीनमात्रा वाली तथा नेवले की ध्वनि आधी मात्रा वाली होती है। ये जब बोलते हैं तो इनके बोलने में उपर्युक्तानुसार समय लगता है।

चाषस्तु वदते मात्रां द्विमात्रं चैव वायसः ।
शिखी रौति त्रिमात्रं तु नकुलस्त्वर्धमात्रकम् ।।

६ उच्चैरुदात्तः

तालु आदि भागों के स्थान में ऊपर वाले भाग से बोले जाने वाले अच् की उदात्त संज्ञा होती है।

७ नीचैरनुदात्तः

तालु आदि स्थानों में निचले भाग से बोले जाने वाले अच् की अनुदात्त संज्ञा होती है।

८ समाहारः स्वरितः

जिसमें उदात्त और अनुदात्त वर्णों के धर्म सम्मिलित हो, वह अच् को स्वरित संज्ञक होता हैं।

स नवविधोऽपि प्रत्येकमनुनासिकत्वाननुनासिकत्वाभ्यां द्विधा ।।

वह अच् ह्रस्व तथा उदात्त आदि भेद के कारण 9 प्रकार का होते हुए अनुनासिक और अनुनासिक के भेद से दो-दो प्रकार के होते हैं।

९ मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः

मुखसहितनासिकयोच्चार्यमाणो वर्णोऽनुनासिकसंज्ञः स्यात् । तदित्थम् – अ इ उ ऋ एषां वर्णानां प्रत्येकमष्टादश भेदाः । ऌवर्णस्य द्वादश, तस्य दीर्घाभावात् । एचामपि द्वादश, तेषां ह्रस्वाभावात् ।।

मुख सहित नासिका (नाक) से बोला जाने वाला वर्ण अनुनासिक संज्ञक हो।

वह अच् इस प्रकार है- अ इ उ ऋ इन वर्णो में प्रत्येक वर्णों के 18-18 भेद होते हैं। ऌ वर्ण का 12 भेद होता है। उसमें दीर्घ का अभाव होता है। एच् प्रत्याहार में आए वर्ण के भी 12 भेद होते हैं। इसमें ह्रस्व का अभाव होता है

स्वरों के भेद

अ इ उ ऋ ऌ	**अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ**	**अ इ**
ह्रस्व उदात्त अनुनासिक	दीर्घ उदात्त अनुनासिक	प्लुत
ह्रस्व उदात्त अननुनासिक	दीर्घ उदात्त अननुनासिक	प्लुत
ह्रस्व अनुदात्त अनुनासिक	दीर्घ अनुदात्त अनुनासिक	प्लुत
ह्रस्व अनुदात्त अनुनासिक	दीर्घ अनुदात्त अनुनासिक	प्लुत
ह्रस्व स्वरित अनुनासिक	दीर्घ स्वरित अनुनासिक	प्लुत

एस बी एस एस कॉलेज बेगूसराय
प्राध्यापक साजन कुमार